तीन साधु

यूनुस आगास्कर

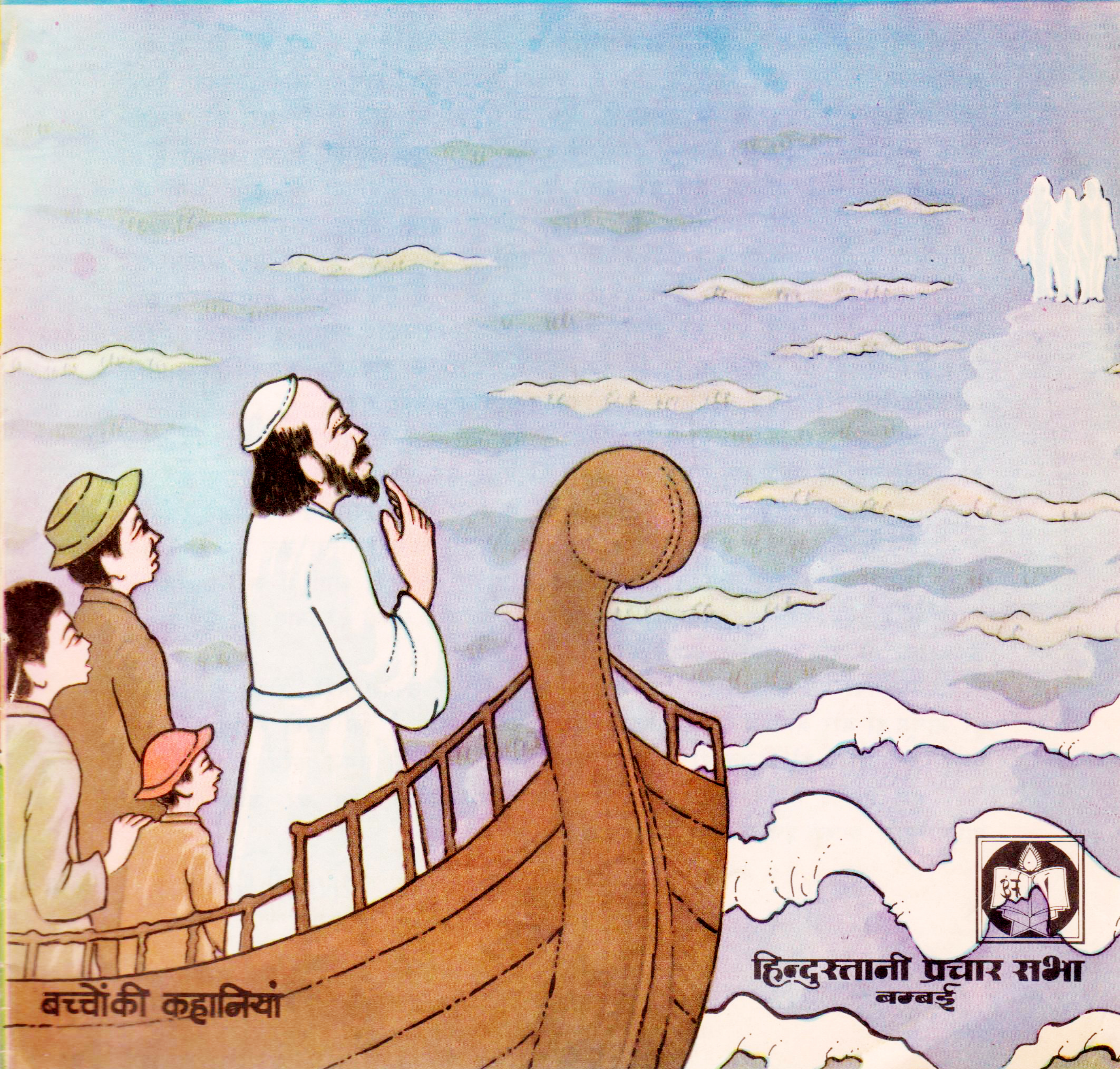

बच्चोंकी कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमज़ोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ़ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

14

संपादक : मूलशंकर भट्ट

बच्चों की कहानियां–२०

तीन साधु

यूनुस आगास्कर

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८१

चित्रकार :
के. एम. शेणै

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ऑनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता
एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ -२२६००१
२८५/जे, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई ४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००९
६३१-७ महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

तीन साधु

ईसाइयों के एक बड़े पादरी किसी तीर्थ की ओर समुद्र-यात्रा कर रहे थे। इसी जहाज पर बहुत से दूसरे यात्री भी सफर कर रहे थे।

मौसम बहुत अच्छा था। हवा धीमी-धीमी चल रही थी। यात्री जहाज के डेक पर आराम कर रहे थे या टोलियों में बैठे गपशप कर रहे थे। पादरी साहब भी डेक पर आकर टहलने लगे।

टहलते हुए उन्होंने देखा कि चन्द आदमी जहाज के अगले हिस्से में खड़े हैं और एक मछेरा, दूर समुद्र में उंगली के इशारे से उन्हें कुछ बता रहा है। पादरी साहब ने उस ओर देखा, जहां मछेरा इशारा कर रहा था। उन्हें तो कुछ भी दिखाई नहीं दिया, बस खिली हुई धूप में समुद्र का पानी चमक रहा था।

वे कुछ करीब जाकर उनकी बातें सुनने लगे, लेकिन मछेरे ने उन्हें देखते ही आदर से, सिर से टोपी उतारी और खामोश हो गया। दूसरे यात्रियों ने भी टोपियां उतारीं और सिर झुकाकर सलाम किया।

"मेरे कारण अपनी बातें क्यों बन्द करते हो दोस्त?", पादरी ने कहा, "मैं तो खुद यह जानने आया हूं कि तुम भले-मानस लोग क्या कर रहे हो ?"

"यह मछेरा हमें साधुओं के बारे में बता रहा था," उनमें से एक यात्री ने आहिस्ता से जवाब दिया।

"साधु ? कौन सा साधु ?," पादरी ने आगे बढ़ते हुए पूछा और एक सन्दूक पर जा बैठे, "मुझे भी उनके बारे में कुछ बताओ। मैं सुनना चाहता हूं। और आप क्या बता रहे थे इशारे से ?"

"वह तो मैं उस द्वीप की बातें कर रहा था। वह देखिए, वहां," मछेरे ने समुद्र में दाहिनी ओर एक धब्बे की तरफ उंगली उठाई, "उस जगह कुछ साधु रहते हैं जो अपनी आत्मा की मुक्ति और शांति के लिए साधना करते हैं।"

"कौन-सा द्वीप ? मुझे तो कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा," पादरी बोले।

"वहां, बहुत दूर। अगर आप मेरी उंगली की सीध में देखें तो आपको दिखायी देगा। आपको बादल का वह टुकड़ा दिखायी देता है? बस, उसी के नीचे बायीं ओर एक हल्की-सी पट्टी दिखायी देती है। वही है वह द्वीप !"

पादरी साहब ने बहुत ध्यान से देखा लेकिन उनकी आंखों को समुद्र में दूरतक देखने की आदत नहीं थी। इसलिए उन्हें सूरज की रोशनी में चमचम करते पानी के सिवा कुछ भी दिखायी नहीं दिया।

"माफ करना, मुझे वह जगह दिखायी नहीं दे रही है। लेकिन यह तो बताओ कि वे साधु कौन हैं ?", उन्होंने पूछा।

मछेरा बोला, "वे लोग बड़े धर्मात्मा हैं। मैंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना था, लेकिन पिछले साल तक तो मुझे भी उन्हें देखने का मौका नहीं मिला था।"

उसके बाद मछेरे ने बताया कि एक बार वह समुद्र में मछलियां पकड़ रहा था कि उसकी नाव रात के तूफान में फंस गयी। वह अनजाने में उसी द्वीप से जा लगा।

भोर हुई तो वह द्वीप पर इधर-उधर फिरने लगा। अचानक उसे मिट्टी की एक कुटिया दिखायी दी, जिसके दरवाजे पर एक बढ़ा आदमी खड़ा था। फिर दो और बूढ़े आदमी कुटिया से बाहर निकले। वे लोग बड़े प्यार से उसे कुटिया के अन्दर ले गये, खिलाया-पिलाया, उसकी गीली चीजें दुरुस्त कीं और फिर उसकी

टूटी नाव बनाने में मदद करते रहे। "

"वे लोग देखने में कैसे हैं?", पादरी ने पूछा।

"उनमें से एक का कद छोटा है और पीठ झुकी हुई है। वह पादरियों जैसा चोंगा पहने रहता है। उसकी उम्र बहुत ज्यादा है। मैं समझता हूं कि वह सौ साल से ऊपर होगा। उसकी सफेद दाढ़ी भी अब हरी होती जा रही है। मगर वह हमेशा मुस्कराता रहता है और उसका चेहरा आसमानी फरिश्तों की तरह चमकता है।

"दूसरे का कद पहले से ऊंचा है। वह हमेशा एक फटा-पुराना किसानों का कोट पहने रहता है। उसकी दाढ़ी बहुत घनी और कुछ पीली-पीली लगती है। वह मजबूत आदमी है। मेरे हाथ लगाने से पहले ही उसने मेरी नाव को इस तरह उलट कर सीधा कर दिया जैसे कोई पानी की बाल्टी उलटता है। वह भी बड़ा दयालु और हंसमुख है।

"तीसरा सबसे ऊंचा है। उसकी दाढ़ी रूई के गाले की तरह सफेद है और घुटनों तक पहुंचती है। उसकी पलकें भी बहुत लम्बी और घनी हैं। उसके चेहरे

से सख्ती टपकती है। वह अपनी कमर से सिर्फ चटाई का एक टुकड़ा बांधे रहता है।"

"उन्होंने तुमसे कुछ बात भी की?", पादरी ने फिर सवाल किया।

"ज्यादातर तो वे खामोशी से काम करते रहे। आपस में भी बहुत कम बोलते थे। उनमें से कोई सिर्फ आंख उठाकर देखता तो दूसरे उसकी बात समझ जाते।

"मैंने सबसे ऊंचे साधु से पूछा कि क्या वे लोग बड़ी लम्बी मुद्दत से यहां रह रहे हैं तो उसके माथे पर बल पड़ गये और वह इस तरह बड़बड़ाने लगा जैसे उसे गुस्सा आ गया हो।

"सबसे बूढ़े साधु ने उसका हाथ अपने हाथ में लिया और प्यार से मुस्करा दिया। वह लम्बा साधु खामोश हो गया। सबसे बूढ़े साधु ने सिर्फ इतना ही कहा, "हम पर दया करो," और मुस्कराता रहा।

मछेरा अपनी कहानी सुना रहा था और जहाज उस द्वीप के करीब होता जा रहा था।

"अब देखिए, वह द्वीप साफ दिखायी दे रहा है," एक व्यापारी ने उंगली से दिखाते हुए पादरी से कहा।

पादरी ने देखा, एक काली पट्टी-सी नजर आ रही थी।

कुछ देर तक उधर देखते रहने के बाद वह जहाज के अगले हिस्से से पीछे की ओर आये और जहाज चलानेवाले से बोले, "वह कौन-सा द्वीप है?"

"उस द्वीप का कोई नाम नहीं है। इस समुद्र में ऐसे कई द्वीप हैं," वह आदमी बोला।

"क्या यह सच है कि वहां कुछ साधु रहते हैं जो अपनी आत्मा की मुक्ति चाहते हैं?"

"महाशय, सुना तो यही है लेकिन मैं नहीं जानता कि यह सच है या झूठ! कुछ मछेरों का कहना है कि उन्होंने उन साधुओं को देखा है। लेकिन मुझे लगता वे सब गप हांकते हैं।"

"मैं उस द्वीप पर उतरकर उन लोगों से मिलना चाहता हूं। क्या ऐसा हो सकता है?," पादरी ने पूछा।

"हमारा जहाज उस द्वीप तक नहीं जा सकता, लेकिन आप चाहें तो नाव में बैठकर वहां तक जा सकते हैं। आप

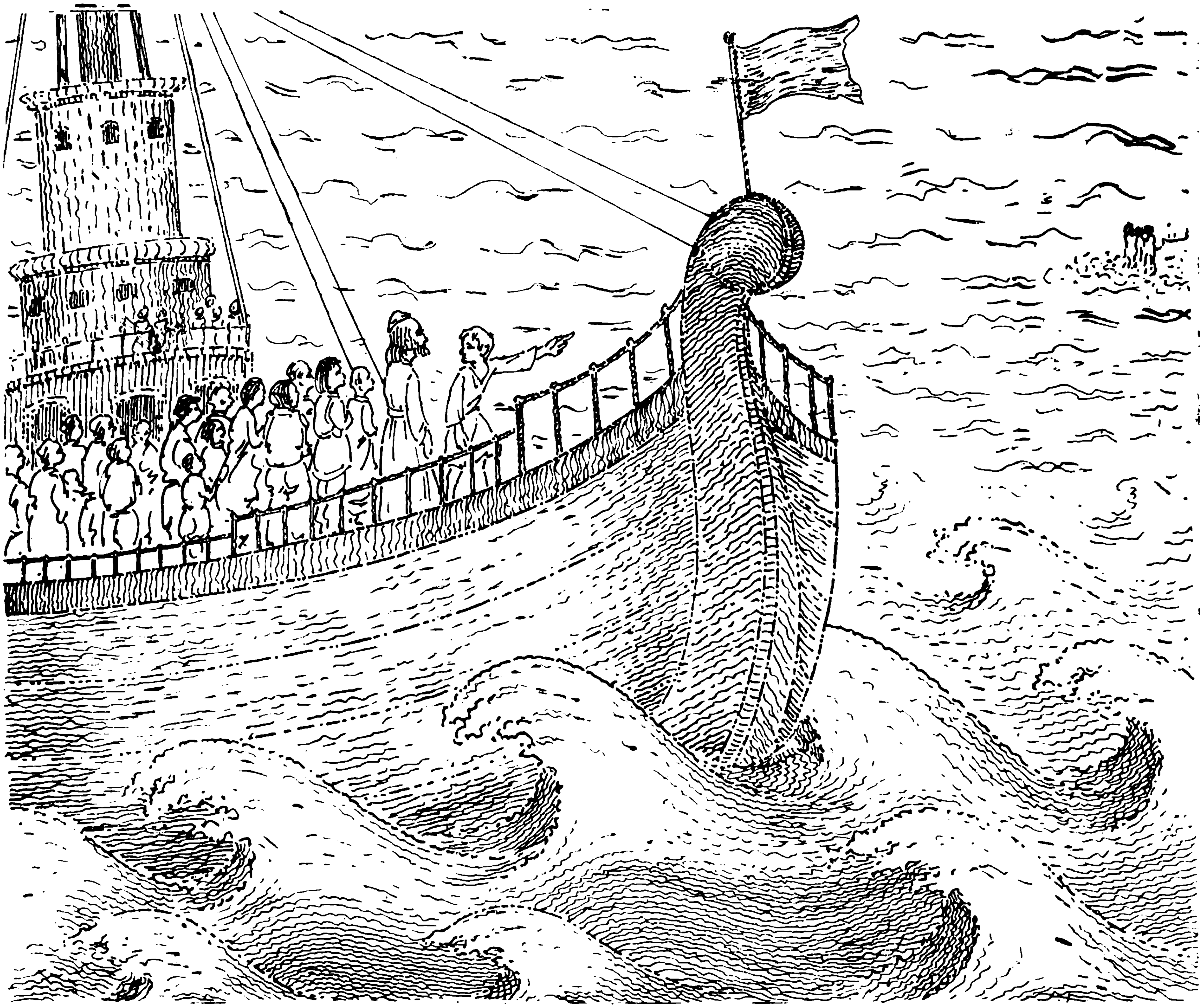

कप्तान साहब से बात कर लें तो अच्छा होगा।"

कप्तान को बुलाया गया। उसके आने पर पादरी साहब ने कहा, "देखिए, मैं उस द्वीप के साधुओं से मिलना चाहता हूं। क्या आपके आदमी मुझे नाव में बिठाकर वहां तक ले जा सकते हैं?"

"क्यों नहीं, लेकिन इसमें बहुत वक्त बर्बाद हो जायेगा और फिर आप वहां जाकर करेंगे क्या? वे लोग इस लायक नहीं हैं कि आप इतनी तकलीफ उठाकर उन्हें धर्म की शिक्षा देने जायें। मैंने सुना है कि वे बेवकूफ बूढ़े न कुछ समझते हैं और न कुछ बोलते हैं। समुद्र की मछलियां भी उनसे ज्यादा समझदार होती हैं।"

"देखो, मैं उनसे मिलना चाहता हूं और तुम्हारी मेहनत और समय की

कीमत देने को तैयार हूं। तुम मुझे एक नाव दिला दो तो मेहरबानी होगी।"

कप्तान ने मजबूर हो खलासियों को हुक्म दिया कि जहाज का मुंह उस द्वीप की तरफ फेर दें। जहाज के अगले हिस्से में पादरी साहब के लिए एक कुर्सी रख दी गयी और वे उस पर बैठकर द्वीप को देखने लगे।

जहाज के सारे मुसाफिर वहीं इकट्ठा हो गये और द्वीप की ओर टकटकी बांधकर देखने लगे। जिनकी आंखें तेज थीं, उन्होंने वहां की पहाड़ियों और फिर मिट्टी की कुटिया को फौरन पहचान लिया।

एक आदमी ने तीनों साधुओं को भी ढूंढ़ निकाला।

कप्तान एक दूरबीन ले आया। कुछ देर तक उसमें देखते रहने के बाद उसने पादरी साहब को वह दूरबीन थमा दी और बोला, "बिलकुल सामने की ओर, नाक की सीध में देखिए। समुद्र के किनारे तीन आदमी खड़े नजर आते हैं न? वहां जो चट्टान दिखायी देती है ना, उसकी बायीं तरफ?"

पादरी ने दूरबीन लेकर उसे सीधा किया और देखा। तीन आदमी खड़े थे। एक बहुत ऊंचा, दूसरा उससे कम ऊंचा और तीसरा दुबला, पतला और झुका हुआ। वे तीनों एक-दूसरे का हाथ पकड़े किनारे पर खड़े थे, जैसे जहाज का इन्तजार कर रहे हों।

कप्तान ने पीछे मुड़कर पादरी से कहा, "महाशय, हमारा जहाज इससे आगे नहीं जा सकता। अगर आप उस द्वीप तक जाना चाहते हैं तो आपको नाव में जाना होगा। आपके वापस आने तक हम यहां लंगर डाले खड़े रहेंगे।"

रस्सियों से लंगर डाला गया और बादबान लपेट दिए गये। एक झटका लगा और जहाज हिलने लगा।

एक कश्ती पानी में उतारी गयी। पतवार चलानेवाले इसमें कूदे। पादरी ने भी सीढ़ी से उतरकर उसमें जगह ले ली। मल्लाहों ने पतवार चलाना शुरू किया और नाव तेजी से उस द्वीप की ओर बढ़ने लगी।

द्वीप के करीब पहुंचने पर उन्होंने उन तीनों को देखा। ऊंचा आदमी अपनी कमर से चटाई का टुकड़ा बांधे हुए था। छोटे कदवाले ने किसान-कोट पहन रखा

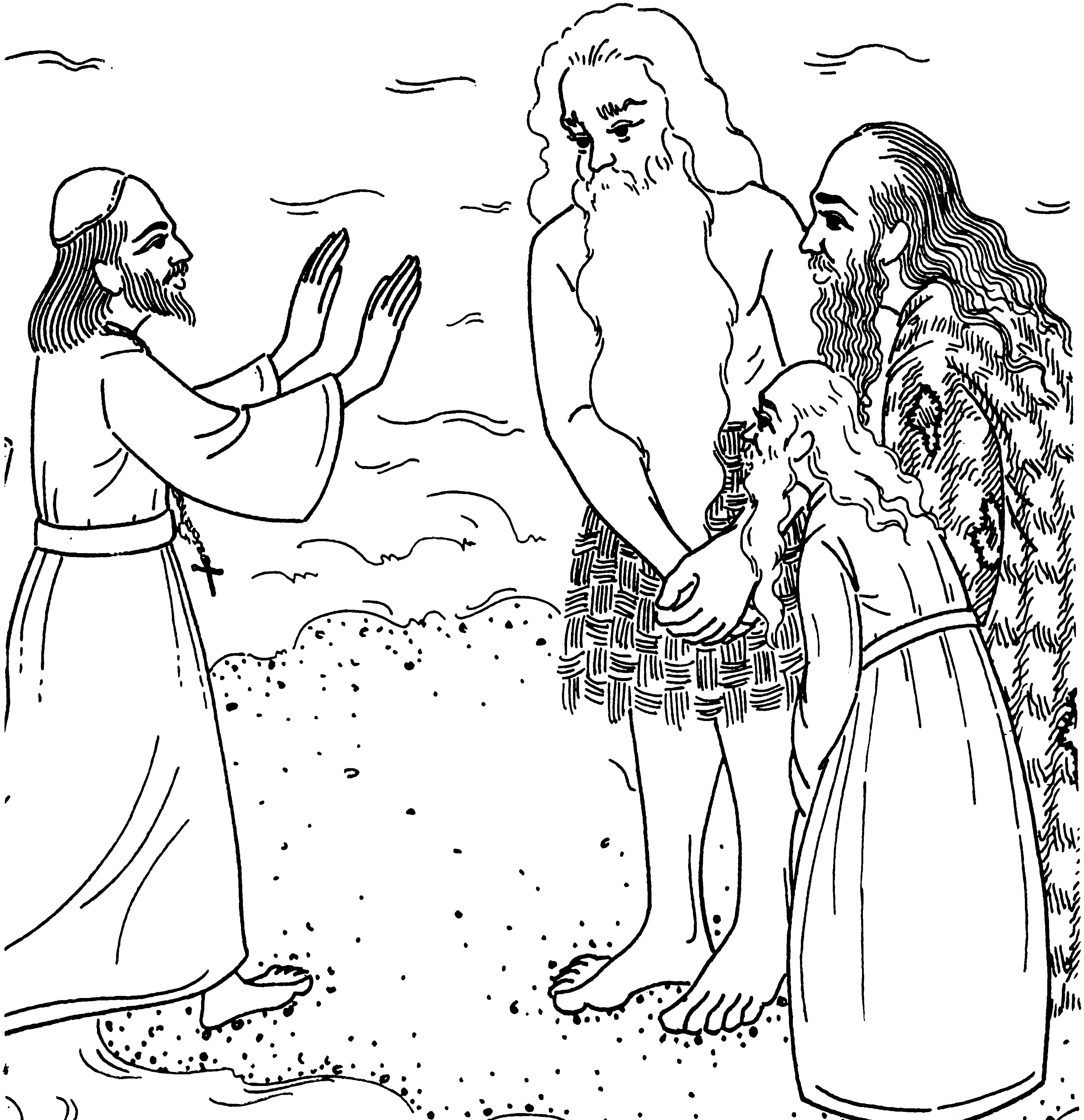

"द्वीप के करीब पहुंचने पर उन्होंने उन तीनों को देखा।"

था। और सबसे बूढ़ा और झुका हुआ आदमी पादरियों जैसा चोंगा पहने हुए था। तीनों हाथ-में-हाथ डाले खड़े थे।

नाविकों ने पतवार खींच ली और नाव को थामे रहे ताकि पादरी नीचे उतर सकें।

पादरी को देखकर तीनों बूढ़ों ने सिर झुकाकर प्रणाम किया। पादरी ने उन्हें दुआ दी। तीनों के सिर और अधिक झुक गये।

पादरी ने उनसे कहा, "ऐ पवित्र लोगो, मैंने सुना है कि आपलोग इस द्वीप पर अकेले रहकर अपनी आत्मा की मुक्ति और लोगों की भलाई के लिए प्रभु ईशु से प्रार्थना करते रहते हैं। मैं प्रभु ईशु का एक मामूली-सा सेवक हूं और उसकी मेहरबानी से, उसके बंदों को धर्म का रास्ता दिखाने का काम करता हूं। मैं चाहता हूं कि आपलोगों को भी आसमानी रोशनी दिखाऊं।"

तीनों ने मुस्कराकर एक-दूसरे को देखा, मगर कुछ बोले नहीं।

पादरी ने कहा, "मुझे बताइए, आप लोग अपनी आत्मा की मुक्ति के लिए क्या कर रहे हैं और इस द्वीप पर रहकर प्रभु और उसकी संतान की सेवा कैसे करते हैं?"

दूसरे साधु ने ठंड़ी सांस लेकर बूढ़े साधु की ओर देखा। बूढ़ा साधु मुस्कराकर बोला, "हे प्रभु के सेवक, हम तो जानते ही नहीं कि प्रभु ईशु की सेवा कैसे की जाती है। हम तो सिर्फ अपनी सेवा करके जीवन की गाड़ी चलाते हैं और कोई भूला-भटका इधर आ जाता है तो उसे खाना खिला देते हैं, या उसकी नाव ठीक कर देते हैं।"

"क्या आप लोग प्रभु की प्रार्थना करते हैं?"

"करते हैं।"

"वह कैसे?"

"हम इस तरह उसकी प्रार्थना करते हैं," बूढ़े ने कहा, "तीन हो तुम और तीन हैं हम, हे प्रभु, हम पर दया करो!"

बूढ़े ने अपनी बात खत्म की और तीनों ने एक साथ आकाश की ओर देखकर कहना शुरू किया, "तीन हो तुम और तीन हैं हम, हे प्रभु, हम पर दया करो।"

पादरी यह सुनकर मुस्करा दिए। वे

एक पत्थर पर बैठ गये और बोले, "मेरे धर्म-बन्धुओ, तुम लोगों की प्रार्थना सही नहीं है। तुम प्रभु को खुश करना चाहते हो लेकिन उसकी सेवा का रास्ता नहीं जानते।

"आओ, मैं तुम्हें सिखाऊं कि प्रार्थना कैसे की जाती है। मैं जो कुछ सिखाऊंगा, वह मेरी अपनी तरफ से नहीं होगा, बल्कि प्रभु ने पवित्र-ग्रंथों में जो आज्ञाएं दी हैं, उसके अनुसार होगा। दुनियावालों को इसी के मुताबिक प्रार्थना करनी चाहिए। आओ, मेरे साथ कहो, ओ हमारे पिता!"

"ओ हमारे पिता!" पहले साधु ने कहा।

"ओ हमारे पिता!" दूसरे साधु ने भी दुहराया।

"ओ हमारे पिता!" तीसरा साधु भी बोला।

"जो स्वर्ग में बसता है," पादरी ने आगे कहा।

पहले साधु ने दुहराया, "जो स्वर्ग में बसता है।"

लेकिन दूसरा साधु इन शब्दों को दुहराने में गलती कर गया और लम्बा साधु तो उनका उच्चारण भी नहीं कर सका। उसकी दाढ़ी और मूंछ के बाल इतने बढ़े हुए थे कि उसका मुंह छुप गया था। दूसरा साधु बहुत बूढ़ा था और उसके सब दांत गिर चुके थे। इसलिए वह भी मुंह-ही-मुंह में बुदबुदाता था और पता नहीं चलता था कि वह क्या कह रहा है।

पादरी ने अपने शब्दों को बार-बार दुहराया और उन लोगों ने बड़ी मुश्किल से उनकी नकल की। बूढ़े पादरी के सामने खड़े होकर उनके मुंह को देखते हुए वे उनके शब्दों को दुहराने लगे।

पादरी ने सारे दिन मेहनत की। एक-एक शब्द को उन्होंने बीस, तीस ही नहीं बल्कि सौ-सौ बार दुहराया। बूढ़े उनकी नकल करते रहे। जब भी वे गलती करते, पादरी उनकी गलती सुधारते और उन्हें फिर से दुहराने के लिए कहते।

आखिर पादरी ने उन तीनों को प्रभु की प्रार्थना याद करा दी। अब वे न सिर्फ पादरी की सही नकल कर सकते थे बल्कि खुद भी प्रार्थना को दुहरा सकते थे। बीच के साधु ने सबसे पहले प्रार्थना सीख ली। पादरी ने उसी को बार-बार दुहराने के लिए कहा। यहां तक कि औरों को भी पूरी प्रार्थना याद हो गयी।

"बूढ़ों ने जमीन तक झुककर उन्हें प्रणाम किया।"

पादरी जब वापस लौटने लगे तो रात हो चुकी थी। चांद पानी से उतरता हुआ मालूम दे रहा था। पादरी से जुदा होते वक्त बूढ़ों ने जमीन तक झुककर उन्हें प्रणाम किया।

पादरी ने उन्हें उठाकर सीने से लगाया और उनके माथे को चूमा। अपनी बतायी हुई प्रार्थना के अनुसार प्रभु की याद करने के लिए कहकर, वे नाव में सवार हो गये।

जिस समय नाव जहाज की ओर वापस जा रही थी, पादरी के कानों में साधुओं की आवाजें गूंज रही थीं, जो प्रभु की प्रार्थना को जोर-जोर से दुहरा रहे थे। जहाज के करीब पहुंचने पर उनकी आवाजें पीछे रह गयीं लेकिन चांदनी में उनकी परछाई अब भी दिखायी दे रही थी। वे उसी तरह हाथ में हाथ डाले खड़े थे। सबसे छोटा साधु बीच में, सबसे ऊंचा दायीं तरफ और दूसरा साधु बायीं तरफ।

पादरी के जहाज पर पहुंचते ही बादवान खोल दिए गये, लंगर उठा लिया गया। बादवानों में हवा भर गयी और जहाज चल निकला।

पादरी ने जहाज के पिछले हिस्से में कुर्सी बिछायी और पीछे छूटते द्वीप को देखते रहे। कुछ देर तक उन्हें वे तीन साधु दिखायी देते रहे फिर आहिस्ता-आहिस्ता वे आंखों से ओझल हो गये। सिर्फ द्वीप दिखायी देता रहा। आगे जाने पर वह भी नजरों से छुप गया और रह गया दूरतक चमचम करता समुद्र का पानी !

सारे मुसाफिर नींद की गोद में झूलने लगे और जहाज पर खामोशी छा गयी।

पादरी को नींद नहीं आ रही थी। वे चुपचाप, अकेले बैठे उसी ओर देख रहे थे जिधर द्वीप छुप गया था। उनका दिमाग उन्हीं साधुओं के बारे में सोच रहा था। वे लोग प्रभु की प्रार्थना सीखकर कितने खुश थे। पादरी ने दिल-ही-दिल में प्रभु ईशु का शुक्रिया अदा किया जिसने उन्हें यह पवित्र मौका दिया कि धर्म की शिक्षा अनजान लोगों तक पहुंचा सकें।

पादरी अपने ख्यालों में खोये हुए उसी तरफ देखे जा रहे थे। समुद्र कि मौज पर चांदनी रह-रहकर चमक उठती थी। अचानक उन्हें पानी में कोई सफेद

चीज चमकती दिखायी दी। चांदनी ने जो रास्ता-सा बनाया था उस पर कोई चीज तेजी से चली आ रही थी। पादरी सोचने लगे, यह कोई समुद्री परिन्दा है या किसी छोटी-सी नाव का बादवान हवा से फड़फड़ा रहा है?

फिर उन्हें लगा कि शायद कोई नाव हमारे पीछे आ रही है। लेकिन यह तो हम से भी तेज चल रही है। एक मिनट पहले वह कितनी दूर थी, और अब कितनी करीब होती जा रही है! नहीं, यह नाव नहीं हो सकती क्योंकि इसमें बादवान तो है ही नहीं। कुछ भी हो, यह चीज हमारे पीछे आ रही है और बहुत जल्द हम तक पहुंचनेवाली है।

पादरी ने गौर से देखा लेकिन नहीं समझ सके कि वह क्या है। वह न तो नाव थी, न कोई परिन्दा और न ही कोई मछली। आदमी भी इतना बड़ा नहीं हो सकता और फिर बीच समुद्र में आदमी कहां से आयेगा?

पादरी ने खड़े होकर जहाज चलाने-वाले से कहा, "वह देखो दोस्त, पानी पर क्या चल रहा है? क्या तुम बता सकते हो कि वह क्या है?

लेकिन उनको अपनी बात का जवाब मिल चुका था। अब वे साफ देख सकते थे कि वे तीनों साधु पानी पर दौड़ते हुए उनके जहाज की तरफ आ रहे थे। वे दूध की तरह सफेद लग रहे थे और उनकी दाढ़ियां चांदनी की तरह चमक रही थीं। वे इतनी तेजी से जहाज के करीब होते जा रहे थे, जैसे जहाज चल न रहा हो, चुपचाप खड़ा हो। जहाज चलानेवाले ने जब यह देखा तो डर के मारे उसके हाथों से चक्कर छूट गया।

"हे प्रभु, वे साधु पानी पर इस तरह दौड़ रहे हैं जैसे वे सूखी धरती पर हों," उसका चिल्लाना सुनकर सारे यात्री हड़बड़ाकर जागे और जहाज के पिछले हिस्से में इकट्ठा हो गये।

उन्होंने देखा कि तीनों साधु हाथ-में-हाथ डाले जहाज की ओर तेजी से चले आ रहे हैं। वे दौड़ नहीं रहे थे। उनके कदम तो अपनी जगह जमे हुए थे और वे पानी पर बहुत तेजी से फिसल रहे थे। दोनों तरफ के दो साधु हाथ हिला-हिलाकर जहाज को रुकने का इशारा कर

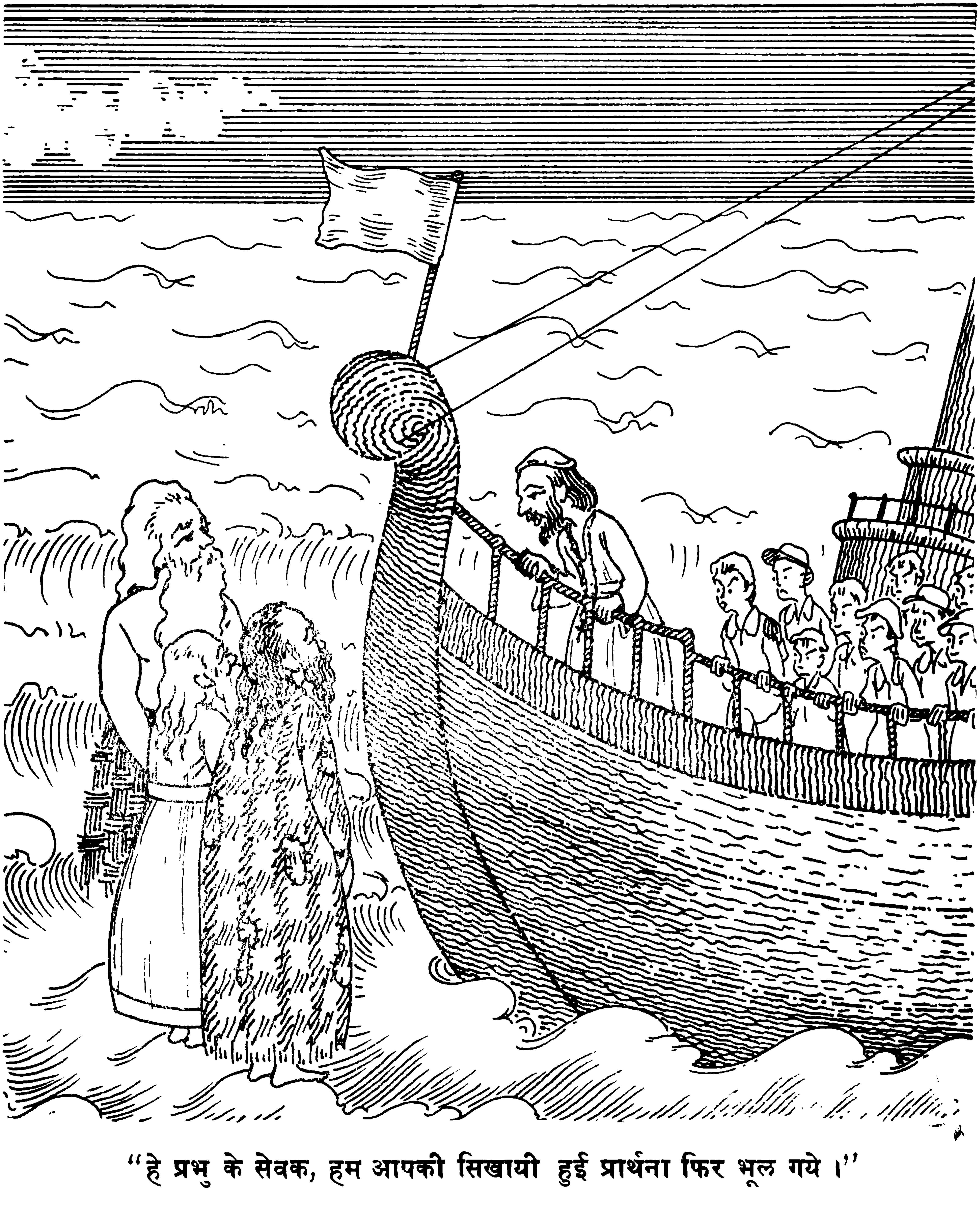

"हे प्रभु के सेवक, हम आपकी सिखायी हुई प्रार्थना फिर भूल गये ।"

रहे थे लेकिन जहाज के रुकने से पहले ही वे जहाज तक पहुंच गये।

अपना सर उठाकर वे एक आवाज में बोले, "हे प्रभु के सेवक, हम आपकी सिखायी हुई प्रार्थना फिर भूल गये। जबतक हम उसे दुहराते रहे, वह याद रही, लेकिन थोड़ी देर के लिए रुकते ही वह हमारे दिमाग से उतरने लगी। पहले हम एक या दो शब्द भूले और फिर पूरी प्रार्थना भूल गये। अब हमें कुछ भी याद नहीं। मेहरबानी करके हमें फिर से वह प्रार्थना सिखा दीजिए।"

पादरी ने अपने सीने पर सलीब बनायी और जहाज के किनारे पर झुककर कहा, "हे प्रभु के प्यारो, आपकी अपनी ही प्रार्थना उस तक पहुंच जायेगी। मैं इस लायक नहीं कि आप लोगों को सिखा सकूं। आप हम पापियों के लिए भी प्रार्थना कीजिए," इतना कहकर पादरी ने उन बूढ़ों के सामने सिर झुका दिया।

वे तीनों मुड़े और समुद्र पर फिसलते हुए वापस चले गये। यहां तक कि नजरों से ओझल हो गये। लेकिन जिस जगह वे नजरों से ओझल हुए थे, वहां भोर होने तक एक रोशनी-सी दिखायी देती रही। ●

(तोल्स्तोय की कथा पर आधारित)

हमारे आगामी प्रकाशन

- कृष्ण का गोवर्द्धनधारण
- अचल आख्यान
- हक़ की रोटी
- श्वेतकेतु
- प्यारे नबी
- घास के मूसल
- द्रोण-द्रुपद
- बलि का बकरा
- हज़रत राबिया बसरी
- सेवा की राह

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना 1938में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी हुई कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी दूसरी किस्त है। हर किताब की क़ीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२